SHIKSHA SAMVAD
International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
© Shiksha Samvad|Volume-03| Issue-02| December- 2025
Available online at: https://shikshasamvad.com/
DOI:- https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i2.4

बदलते परिवेश में ग्रामीण और शहरी जीवन

डॉ. श्याम नारायण वर्मा

सहायक आचार्य,समाजशास्त्र, महामाया राजकीय महाविद्यालय, श्रावस्ती।

मेल–shyamnarayanverma2013@gmail.com

सारांश:

यह शोधपत्र "बदलते परिवेश में ग्रामीण और शहरी जीवन" भारतीय समाज में हो रहे सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। लेखक के अनुसार परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है, और ग्रामीण तथा शहरी दोनों जीवन–शैलियाँ इससे अछूती नहीं रहीं। स्वतंत्रता के बाद भूमि सुधार, पंचायती राज, हरित क्रांति, शिक्षा, संचार, औद्योगीकरण और सरकारी योजनाओं ने ग्रामीण समाज की पारंपरिक संरचनाओं जैसे जाति व्यवस्था, संयुक्त परिवार और जजमानी प्रथा को गहराई से प्रभावित किया। भूमि स्वामित्व अब केवल प्रतिष्ठा का एकमात्र आधार नहीं रहा, बल्कि शिक्षा, रोजगार और राजनीतिक भागीदारी ने निचले वर्गों को सशक्त किया है। दूसरी ओर तीव्र शहरीकरण ने सुविधाओं के साथ–साथ प्रदूषण, अपराध, सामाजिक अलगाव और पारिवारिक विघटन जैसी समस्याएँ भी उत्पन्न की हैं। निष्कर्षतः अध्ययन दर्शाता है कि आज ग्रामीण और शहरी जीवन–शैलियाँ परस्पर घुल–मिल रही हैं, जिससे एक मिश्रित सामाजिक संरचना उभर रही है।

मुख्य शब्द : "बदलते परिवेश, ग्रामीण और शहरी जीवन, भारतीय समाज ।

परिवर्तन प्रकृति का शास्वत नियम है, प्रकृति के इस स्वाभाविक गुण से कोई भी वस्तु अछूती नहीं है प्रत्येक समाज चाहे वह ग्रामीण समाज हो या शहरी, सभ्य समाज हो या फिर असभ्य, नवीन समाज हो या पुरातन सभी परिवर्तन के दौर से गुजर रहें हैं जैसा कि हीराक्लिट्स विद्वान ने कहा है कि "संसार की हर वस्तु परिवर्तन के बहाव में है।" इसी प्राकृतिक सच्चाई से सभी आच्छादित हैं।

भारत का ग्रामीण संसार सदियों से बदलाव के दौर से गुजरता रहा है बस समय–काल परिस्थियों ने इस बदलाव में मंद गति और तीव्र गति का निर्धारण किया है। भारत के ग्रामीण जीवन में आजादी के बाद तेजी से परिवर्तन की प्रक्रिया प्रघटित हुई है। वर्ण व्यावस्था, जातीय संरचना, संयुक्त परिवार प्रणाली, जजमानी व्यवस्था सभी के रूप स्वरूप में परिवर्तन हुआ है। आजादी के बाद बालिग मताधिकार, जमींदारी प्रथा के उन्मूलन, पंचायती राज व्यवस्था की स्थापना, कृषि के क्षेत्र में हरित क्रांति, श्वेत क्रांति, यातायात, संचार के साधनों इत्यादि के विस्तार, शिक्षा के क्षेत्र में

आयी क्रांति व्यापार की बढ़ती गति ने ग्रामीण जीवन में आमूल चूल परिवर्तन लाने का कार्य किया है। उक्त पंक्तियां इस सच्चाई का बयान करती हुई–

कहां खो गया मिट्टी का घर,
गोबर से लीपा आंगन।
आम–नीम पर हंसते झूले,
पनघट जाती पनिहारन।
निशा साथ जब महुआ गमके,
खुशबू बिखर–विखर जाती।
बरगद हंसता संग पवन के,
बगिया मंद–मंद गाती।
बटलोई की दाल खो गयी,
चूल्हे पर सींकती रोटी।
अहसासों की सोंध खो गई,
रिश्तों की गठरी छोटी।
कंक्रीट का जंगल पल में,
निगल गया बीता परिवेश।
खग–मृग का जीवन अवशेष।
धरती का अंतस दहलाते,
मर्म समझ ना पाते हैं।
सुख की परिधि सुनहरे घेरे,
निश–दिन बढ़ते जाते हैं।
चैत की मुस्कान खो गई,
फागुन के सब फीके राग।
नवल दुल्हनिया बिन–बैंदी,
बिन इंगूर के सजती ना आज।
बदल गया परिवेश देश का,
बदल गए सब रीति–रिवाज।
बदल गई सब कल की बातें,
बदली जीवन की हर चाल।

सामाजिक न्याय, आर्थिक, राजनीतिक मर्यादा विभिन्न प्रकार के नवोन्मेशी नियम कायदे–कानूनों ने सामाजिक और धार्मिक सहवास से सम्बन्धित प्रतिबन्धों को शिथिल किया है। पेशागत गतिशीलता ने ग्रामीण समाज में बदलाव लाने का कार्य किया है। सदियों से चली आ रही कठोर जाति व्यवस्था में उपेक्षित/विलगित जातियों और वर्गों में नवीन चेतना और जागृति का प्रतुस्फुटन हुआ है। ग्रामीण परिवेश में सत्ता का संघर्ष जोर पकड़ने लगा है, जिसके क्रम में निम्न वर्ग

© Shiksha Samvad| Received: 03 December 2025 | Accepted: 10 December 2025 | Published: 15 December 2025

ने उच्च वर्गों को चुनौती देना प्रारम्भ कर दिया है। इस आधार पर हम कह सकते हैं कि बदलते हुए परिवेश में ग्रामीण जीवन में लगातार अस्थिरता एवं परिवर्तन नजर आ रहे हैं।

बदलते परिवेश में ग्रामीण जीवन में होने वाले परिवर्तनों पर एम.एन.श्रीनिवास का अध्ययन प्रासंगिकता से परे नहीं है। उन्होने अपनी संस्कृतिकरण और प्रबल जाति की अवधारणा प्रस्तुत की है। कई विद्वानों की भांति एम.एन. श्रीनिवास ने वर्तमान भारतीय जीवन में घटने वाले परिवर्तनों में पाश्चात्यीकरण और धर्मनिरपेक्षीकरण के महत्व को स्वीकार करते है।

भारतीय समाजशास्त्री आन्द्रे बेतेइ नये वर्गों के अभ्युदय और शक्ति या राजनीति पर बल देते हैं, जिनमे ंअभी तक उपेक्षित और शोषित वर्ग सत्ता अपने हाथ में लेने के लिए संघर्ष कर रहें हैं।

ग्रामीण भारत में अभी भी भूमि ही सम्पत्ति, सम्मान और प्रतिष्ठा की मुख्य पहचान है। भारतीय ग्रामीण परिवेश में यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि किस जाति के पास कितनी कृषि योग्य भूमि है। इतिहास गवाह है कि भारत के गांव की ज्यादातर भूमि पर द्विज जातियों का एकाधिकार रहा है, परन्तु बदलते परिवेश में अब भूमि का स्वामित्व द्विज जातियों के हाथ में ही न रहकर मध्य और निम्न जातियों के हाथ में आ रहा है। इस आधार पर हम कह सकते हैं कि एक समय वह था जब गांवों में कुछ जातियां ही सामर्थ्यवान मानी जाती थीं, किन्तु अव उनकी स्थिति पूर्व जैसी नहीं रह गयी।

अब मात्र भूमि का स्वामित्व ही किसी जाति की प्रभुसत्ता का मानदण्ड नही रह गया है। आधुनिक और पाश्चात्य शिक्षा, सरकारी नौकरियों में स्थान, मताधिकार का अधिकार, पंचायती राज व्यवस्था आदि ने निम्न जातियों को भी प्रतिष्ठा और शक्ति प्रदान की है। आजाद भारत में अल्पसंख्यक जमींदार बहुसंख्यक कृषक जातियों पर जो शासन किया करते थे, अब वह वैसी दशा नही रही है। यातायात और संचार के साधनों के विकास ने स्थानीय रीति–रिवाजों की पृथकता और प्रबलता को कम कर दिया है अब ग्रामीण नेता अथवा ग्रामीण समाज शहरी जीवन शैली का अनुकरण कर रहें हैं। सांस्कृतिक भिन्नता के स्थान पर अधिक समता पैदा होती जा रही है। यह भी देखा गया है कि भारतीय ग्रामों में अधिकतर भूमि कुछ ही जातियों के हाथों में केन्द्रित है, इन लोगों के साथ बहुत सी दस्ताकर जातियों और मजदूर वर्ग के लोग स्थायी और पुश्तैनी रूप से जुड़े हुए हैं। जमींदारी उन्मुलन के फलस्वरूप बहुत सी भूमि पर अब मध्यम और निम्न स्तर की कृषक जातियों का अधिकार हो गया है। इससे उनकी स्थिति सुदृढ़ हुई है इस आधार पर हम कह सकते हैं कि कृषि भूमि का स्वामित्व जाति की उन्नति का एक मात्र कारक नही रहा।

पश्चिमीकरण– अंग्रेजी सत्ता ने ग्रामीण भारत की संस्कृति में भी आमूलचूल परिवर्तन लाने का कार्य किया है। अंग्रेजों ने अपने साथ अपनी यंत्र विद्या, विज्ञान तकनीकी ही साथ नहीं लाये बल्कि नयी–नयी संस्थाओं और विचार धाराओं को लाया, जिसका प्रभाव ग्रामीण जीवन पर पड़ा। अंग्रेजो ने गांवो की भूमि का सर्वे कराया बन्दोवस्त करवाया, सड़क, रेल, डाक, नहरों व यातायात के अन्य साधनों का विस्तार कर ग्रामीण जीवन को बदलने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। एम.एन. श्रीनिवास ने पाश्चात्यीकरण में उन सभी परिवर्तनों को सम्मिलित किया है जो लगभग दो सौ वर्षों के अंग्रेजी शासन के कारण समाज में आये हैं इस प्रक्रिया से सबसे अधिक हमारा ग्रामीण समाज प्रभावित हुआ है। जहां ग्रामीण जीवन जाति आधारित, धर्म आधारित, लिंग–भेद आधारित, रंग आधारित सामाजिक संबंधों से आबद्ध था अब वह बदलने लगा और औपचारिक संबंधों के रूप में ग्रामीण सामाजिक संरचना दिखायी देने लगी है संयुक्त परिवारों में का प्रचलन कमजोर हुआ है, बृद्धजनों की संमस्या बढ़ी है। अनौपचारिक वैवाहिक संबंध बस औपचारिक संबंध बनकर रह गये हैं

जिसके कारण तलाक की दरों में बृद्धि हुयी है, आत्महत्या, घरेलू हिंसा की दरों में बृद्धि ने ग्रामीण जीवन में पाये जाने वाले अपने–पन को खोना प्रारम्भ कर दिया है।

जहां ग्रामीण जीवन प्राचीन भारतीय परम्पराओं का संपोषक रहा है बदलते दौर ने ग्रामीणों को अपनी परम्पराओं धार्मिक मान्यताओं को छोड़कर लौकिकीकरण एवं धर्म निरपेक्षीकरण की ओर उन्मुख किया है। आज ग्रामीण जीवन एक ऐसे दौर से गुजर रहा है जिसे न तो हम पूर्णतया ग्रामीण जीवन शैली से युक्त समाज कह सकते हैं और न ही पूर्णतया शहरी जीवन शैली वाला ग्राम कहा जा सकता है। वास्तव में आज का ग्रामीण जीवन मिश्रित जीवन शैली वाला क्षेत्र बनकर रह गया है। जहां पर दोनों प्रकार की विशेषताएं आसानी से देखी जा सकती है।

आन्द्रे बेते का मानना है कि जैसे–जैसे देश की अर्थव्यवस्था में मुद्रा का विस्तार और प्रसार होता जायेगा, वैसे–वैसे जाति, धर्म अर्थात् भूमि स्वामित्व की एकता समाप्त प्राय होती जायेगी। ग्रामीण आर्थिककी के मुद्रीकरण में भारी मात्रा में क्षेत्रीय भिन्नताएं देखी जा सकती हैं। उन इलाकों में जहां पर गन्ना, जूट एवं कपास जैसी नकदी फसलें उगाई जाती हैं, वहां पर थोड़ी ही भूमि से एक किसान काफी मात्रा में धन की बचत कर सकता है। वह उस बचत को अधिक भूमि की खरीददारी करने में लगा सकता है जिस गांव में अधिकतर भूमि कृषक जातियों के कब्जे में होती है वहां पर तेजी से परिवर्तन की प्रक्रिया नहीं घटित होती है, परन्तु जहां पर अभी भी ब्राह्मण, कायस्थ अथवा वैश्यों का आधिपत्य है, वहां पर उस भूमि के भविष्य में दूसरे लोगों के हाथ में चले जाने की अधिक संभावना है। उदाहरण के लिए तंजौर जिले के ब्राह्मणों के द्वारा भूमि इसलिए बेची गई, क्योंकि अंग्रेजी राज ने उनकी उन्नति के नये मार्ग खोले। पाश्चात्य शिक्षा प्राप्त कर शहर में बसना उन ब्राह्मणों को अधिक फायदे का लगा। कमोवेश बंगाल में भी कायस्थों और वैश्यों में भी यही बात देखने को मिली। एक सक्षम किसान भी अब चाहने लगा है कि उसकी कम से कम एक सन्तान डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, प्रोफेसर एवं नेता के रूप में पेशा अपनाए, जो उच्च शिक्षा के द्वारा ही प्राप्त हो सकता है। इसी सोंच ने ग्रामों की साक्षरता दर को बढ़ाने में महती भूमिका निभाई है।

ग्रामीण जीवन में आमूलचूल परिवर्तन लाने के लिए आजादी के बाद से चलायी गयी विभिन्न योजनाओं का महत्वपूर्ण हाथ रहा है उनमें से कुछ प्रमुख योजनाएं व कार्यक्रम इस प्रकार हैं–

01. पंचायती राज की स्थापना।
02. स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार योजना।
03. रोजगार आश्वासन योजना।
04. राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम।
05. राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन योजना।
06. राष्ट्रीय परिवार लाभ योजना।
07. राष्ट्रीय मातृत्व लाभ योजना।
08. अन्नपूर्णा योजना।
09. जवाहर ग्राम समृद्धि योजना।
10. प्रधानमंत्री ग्रामोदय योजना।
11. प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना।
12. प्रधानमंत्री ग्रामोदय योजना।
13. ग्रामीण जल आपूर्ति कार्यक्रम।

© Shiksha Samvad| Received: 03 December 2025 | Accepted: 10 December 2025 | Published: 15 December 2025

14. इंदिरा आवास योजना।
15. ग्रामीण आवासों के लिए ऋण एवं सब्सिडी की योजना।
16. केन्द्र प्रायोजित ग्रामीण स्वच्छता कार्यक्रम।
17. एकीकृति बंजर भूमि विकास कार्यक्रम।
18. मरूभूमि विकास कार्यक्रम।
19. सूखा संभावित क्षेत्र कार्यक्रम
20. जन–सहयोग और ग्रामीण प्रौद्योगिकी उत्कर्ष परिषद, कपार्ट।
21. ग्रामीण आजीविका मिशन।
22. संपूर्ण स्वच्छता अभियान इत्यादि।

बदलते परिवेश में शहरी जीवन–

जब हम बदलते परिवेश में शहरी जीवन शैली को देखते हैं तो पाते हैं कि भारत आजादी के समय तक जहां पचास प्रतिशत से अधिक गांवों में बसता था अब वह वैसा नहीं रहा। आजादी के बाद से तेजी से बदलाव हुआ और शहरीकरण की प्रक्रिया तेज हुई है क्योंकि वहां की उपलब्ध सुविधाएं किसे नहीं भातीं साधारण सी बात है जहां लोगों को अधिक रोजगार और सुविधाएं उपलब्ध होगीं वहां लोगों का आकर्षण आम बात हैं। शहरी विकासवाद के कारण वर्तमान समय में बड़ी संख्या गांवों से निकलकर शहरों की ओर मुखातिब हुई है। शहरी जीवन वास्तव में ग्रामीण जीवन की अपेक्षा अधिक सुरक्षित होता है क्योंकि वहां पर शिक्षा, चिकित्सा, रोजगार के अवसर और मानव जीवन से जुड़ी अन्य तमाम सुविधाएं बहुतायत मात्रा में उपलब्ध रहती हैं जिसका लाभ उठाना हर कोई चाहता है। जहां एक ओर विभिन्न प्रकार की सुविधाएं शहरों में उपलब्ध होती हैं जो मानव जीवन को खुशहाल बनाती हैं वहीं शहरी जीवन के समक्ष चुनौतियां भी कम नहीं होती हैं। तेजी से शहरों की बढ़ती जनसंख्या, ने शहरों को प्रदूषण से युक्त कर दिया है। अपराधों की संख्या में वृद्धि हुई है। सामाजिक जीवन में अपनापन न के बराबर रह गया है। अपरिचय बोधता का जन्म हुआ है एकाकीपन वृद्धजनों की समस्यायें, नवनिहालों को संस्कार से दूर, मिलावटी और कृत्रिम खाद्य पदार्थ शहरी जीवन के संगी बन गये है। प्रकृति से दूरी शहरी जीवन की विशेषता बन चुकी है। शहरी जीवन आज के समय में वह कूड़े का ढेर बन चुका है जिसमें सामाजिक संबंधों को खोज पाना अत्यन्त कठिन हो चुका है। नुक्कड़ के समाज की बहुलता शहरी जीवन के बदलते परिदृष्य की एक अनूठी विशेषता है। बढ़ती तकनीकी ने शहरी जीवन शैली को एकाकी जीवन शैली के रूप में तैयार कर दिया है। जिसका कुप्रभाव सामाजिक रिश्तों पर आसानी से देखा जा सकता है। किसी को किसी के लिए समय नहीं बचा है। हम कह सकते हैं कि नगरीयता के प्रभाव में आज का युवक स्वतंत्र चिंतन करने लगा है, बुजुर्गों की बातों को तार्किक कसौटी पर उतारने लगा है। इस प्रकार नगरीयता एक सांस्कृतिक व सामाजिक स्थिति है जो शहरों मे पाये जाने वाले व्यवहार, चिन्तन व दृष्टिकोण को समझाती है जो कि गांवो के लोगों के व्यवहार, चिन्तन सव दृष्टिकोण से भिन्न है बच्चों को संस्कार देने की भी फुरसत अब भागमभाग जिन्दगी ने लोगों से छीन ली है। अत्यधिक जनसंख्या घनत्व, बनावटी जीवन से ऊबता शहरी जीवन पुनः ग्रामीण जीवन शैली को अपनाने की ओर उन्मुख होता देखा जा सकता है। शहरों में मटका दाल, चोखा बाटी, चूल्हे की रोटी, मोटे अनाजों का उपयोग बढ़ा है। कोरोना जैसी महामारी ने शहरी जीवन को ग्रामीण जीवन के तौर तरीकों को अपनाने के लिए बाध्य किया है। अब शहरी जीवन शैली में ग्रामीण जीवन

© Shiksha Samvad| Received: 03 December 2025 | Accepted: 10 December 2025 | Published: 15 December 2025

शैली ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराने लगी है। भले पहले ग्रामीण शहरों की सुख सुविधाओं को देखकर आकर्षित हुए परन्तु शहरों का बढ़ता प्रदूषण वहां उत्पन्न हुई आवासों की समस्या, रोजगार की समस्या, टूटते सामाजिक रिश्तों की डोर ने लोगों को अहसास दिला दिया कि शहरी जीवन से ग्रामीण जीवन अधिक बेहतर है। अध्ययन से पता चला कि आज 75 प्रतिशत ग्रामीण शहरी जीवन से ग्रामीण जीवन को बेहतर मानते हैं परन्तु 25 प्रतिशत ग्रामीण आज भी शहरी चमक–दमक की ओर आकर्षित है। इसी प्रकार जब शहरी जीवन जीने वालों से बात की गयी तो पता चला कि 60 प्रतिशत लोग ग्रामीण जीवन को बेहतर मानते हैं और 40 प्रतिशत लोग शहरी जीवन को ही अच्छा स्वीकार करते हैं और वे शहरों में जाना पसन्द करते हैं।

निश्कर्ष– बदलते परिवेश में ग्रामीण व शहरी जीवन मे आमूलचूल परिवर्तन हुआ है यह अकाट्य सत्य है। तेजी से बदलता सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, वैज्ञानिक परिवेश ने ग्रामीण जीवन को अपने स्वाभाविक जीवन से तो दूर किया ही है साथ ही इस प्रक्रिया से शहरी जीवन को भी आच्छादित किया है। वर्थ नामक विद्वान का मानना है कि दो विभिन्न दिशाओं में स्थित गांव व शहर दो ध्रुव के समान हैं जिनमें मनुष्य अपनी–अपनी परिस्थितियों के अनुसार अपना–अपना सामंजस्य स्थापित करता है। वर्थ ने इसी आधार पर ग्राम व शहर का सातत्य बनाया है तथा यह प्रतिपादित किया है कि **"हम कहां रहते हैं"** ? का सम्बन्ध **"हम कैसे रहते हैं"** ? से है। **"हम कैसे रहते हैं"** यह प्रश्न हमें **'गाँव–बोध' व 'नगर बोध'** की ओर ले जाता है।

अति संक्षेप में कहें तो ग्रामीण और शहरी जीवन भले ही सैद्धान्तिक दृष्टि से दो अलग–अलग प्रकार के समाज हैं किन्तु आज के बदलते दौर में वे एक दूसरे से इतने अधिक घुले–मिले हैं कि किसी भी समाज में उनकी विलगता के लक्षणों को इंगित करना कठिन कार्य है। साथ ही इन दोनों जीवन शैली के बारे में कोई निश्चित सिद्धान्त नही बना सकते। क्योंकि हर देश में वहां की स्थानीय परिस्थितियों के हिसाब से परिवर्तन की प्रक्रिया घटित हुई है जैसा परिवर्तन एशिया के गांवों में हुआ है वैसा अमरीका के अति औद्योगीकरण से प्रभावित गांवों में नही हुआ है। पूर्व औद्योगिक शहर जैसे यूनान, रोम में जिस प्रकार का परिवर्तन हुआ है वैसे परिवर्तन आदिवासियों के गांव में नहीं मिलेगा। इस प्रकार का विश्लेषण वास्तव में ग्रामीण और शहरी समाजशास्त्रीयों के सामने एक बड़ चुनौती है।

विज्ञान तकनीकी, संचार क्रांति, डिजिटलीकरण की प्रक्रिया ने भारत के ग्रामीण और शहरी जीवन शैली को बदलने के लिए मजबूर किया है। जहां एक तरफ गांव शहरों की ओर उन्मुखीकरण की प्रक्रिया से युक्त हैं वहीं दूसरी तरफ शहर भी गांवों की ओर उन्मुख हुए हैं इस सच्चाई से इनकार नही किया जा सकता। दोनों (ग्रामीण और शहरी) जीवन आज घुल–मिले नजर आने लगे हैं। जिसमें स्पष्ट और तटस्थ अन्तर कर पाना आसान कार्य नहीं है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः–

01. **एम.एन.श्रीनिवास** : भारत के गांव, राजकमल प्रकाशन नयी दिल्ली, पटना।

02. **नरेन्द्र कुमार सिंघी** : समाजशास्त्र विवेचन, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।

03. **हरिकृष्ण रावत** : समाजशास्त्र विश्वकोष, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर एवं नई दिल्ली।

04. **डॉ. एम.एम. लवानिया, शशी के. जैन** : ग्रामीण समाजशास्त्र, रिसर्च पब्लिकेशन्स जयपुर नयी दिल्ली।

05. **डॉ. धर्मवीर महाजन** : समाजशास्त्र विवेक प्रकाशन जवाहर नगर, दिल्ली–7

06. **श्री श्रीकृष्ण दत्त भट्ट** : सामाजिक विघटन और भारत, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी–सम्मेलन भवन कदम कुंआं पटना।

07. **आन्द्रे बेतेइ** : समाजशास्त्र–उपागम और विधि, नेशनल पब्लिशिंग हाउस जयपुर एवं दिल्ली।

08. **श्यामाचरण दुबे** : मानव और संस्कृति, राजकमल प्रकाशन नयी दिल्ली, इलाहाबाद,पटना।

09. **एम.एन.श्रीनिवास** : आधुनिक भारत में जातिवाद और निबन्ध राजकमल प्रकाशन नयी दिल्ली, पटना।

10. **मैकाइबर एवं पेज :** सोसायटी, मैकमिलन पब्लिशर्स इंडिया लिमिटेड– 1981।

Cite this Article:

डा. श्याम नारायण वर्मा"बदलते परिवेश में ग्रामीण और शहरी जीवन" *Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 03, Issue 02, pp.29-35, December 2025. Journal URL: https://shikshasamvad.com/*

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

डॉ. श्याम नारायण वर्मा

For publication of research paper title

बदलते परिवेश में ग्रामीण और शहरी जीवन

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-03, Issue-02, Month December 2025, Impact Factor-RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://shikshasamvad.com/

DOI:- https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i2.4